

पगडंडी- पर्यटन और ग्रामीण जीवन की समझ का नया प्रयोग

हिमालय हमेशा से पर्यटकों की पसंदीदा जगह रही है . लेकिन पर्यटन के लिए हिमालय में आने वाले लोग यहाँ अक्सर मैदानों की गर्मी से निजात पाने और मौज मस्ती के मकसद से आते हैं . इस तरह के मौज मजे वाले पर्यटन से हिमालय में गंदगी और पर्यावरण को हानि ही पहुँचती है . पर्यटकों से पैसा कमाने के उद्देश्य से शराब और नशीले पदार्थों की बिक्री भी बढ़ जाती है . इससे स्थानीय संस्कृति को भी नुकसान होता है . यानी इस तरह का यह पर्यटन पर्यावरण और संस्कृति दोनों के लिए खतरा बन गया है .

हिमाचल प्रदेश के पालमपुर के पास कंडबाड़ी गाँव में युवाओं का एक समूह संभावना नाम से काम कर रहा है . इस समूह ने हिमाचल की संस्कृति और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पर्यटन का इस्तेमाल करने का सोचा. इस काम में सहयोग के लिए सीकिंग हिमालया नामक एक स्थानीय कंपनी से तकनीकी रिश्ता बनाया गया. यह कंपनी भी हिमाचली युवाओं द्वारा ही चलाई जाती है .

संभावना और सीकिंग हिमालया ने 'पगडंडी' नामक एक ऐसा कार्यक्रम बनाया जिसमें देश भर के लोग हिमाचल में आयें और स्थानीय गाँव में गाँव वालों के साथ उनके घरों में ठहरें , उनकी खेती, गाय-बकरी पालन के रोजमर्रा के कामों में हाथ बटाएं, स्थानीय मुद्दों और समस्याओं के बारे में जानकारी लें, स्थानीय समुदाय की ताकत और अच्छाइयों को समझें. पूरे प्रवास में हर तरह के नशे से पूरी तरह दूर रहें. गाँव में कोई भी बाहरी खाने की चीज़ ना लेकर जाएँ . कोई प्लास्टिक या दूसरी तरह का कचरा गाँव में या पहाड़ में हरगिज़ ना डालें . पूरे प्रवास में बिलकुल शोर ना करें स्थानीय निवासीयों और माहौल का सम्मान करें .

इस तरह के पहले प्रयोग में अट्ठारह लोग चुने गए थे . इन लोगों में नौ साल की लड़की से लेकर सत्तावन साल के सज्जन तक शामिल थे . इन चुने गए लोगों में शिक्षक, रंगकर्मी, सामाजिक कार्यकर्ता, विद्यार्थी, शामिल थे . यह सभी लोग कंडबाड़ी गाँव में स्थित संभावना के मिट्टी बांस और चीड़ से बने प्रांगण में आकर रुके . यहाँ सभी को इस यात्रा के बारे में एक बार फिर से समझाया गया . सभी को बताया गया कि इस दौरान वे कोई भी प्लास्टिक या किसी भी तरह का कचरा गाँव में नहीं डालेंगे , गाँव में किसी तरह का शोर ना हो इस का खयाल रखेंगे , स्थानीय लोगों के खेती , पशुपालन, कताई, घर की सफाई , खाना बनाना, जंगल से पत्ते और लकड़ी लाना आदि कामों में शामिल होंगे.

अगले दिन सभी लोग कंडबाड़ी से बैजनाथ तक मिनी बसों से गए . बैजनाथ से कंडकोसरी के लिए पैदल यात्रा शुरू करी गयी . यह सात किलोमीटर की यात्रा थी जो पहाड़ी रास्तों से होकर करी गयी . इसमें इस दल को पांच घंटे लगे . दल के सदस्यों ने रास्ते में जंगल में खाना खाया , जंगल में पानी ढूँढा . सबने चीड़ के पेड़ों में लगाए हुए टिन के छोटे छोटे कोन देखे जिसमें चीड़ का गोंद जिसे लीसा कहा जाता है इकठ्ठा हो रहा था . जंगल बिलकुल निर्जन था . आगे जाकर वन विभाग का एक लीसा गोदाम बना हुआ था वहाँ भी कोई नहीं था सिर्फ बड़ी तादात में लीसा के कनस्तर रखे हुए थे . शहर से आये हुए लोगों को पहाड़ी चढ़ने का कोई अभ्यास नहीं था . थोड़ी ही चढ़ाई के बाद

सभी हांफ कर बैठ जाते थे . लेकिन कुछ देर के आराम के बाद फिर से ताजादम होकर फिर से चढ़ाई चढ़ने लगते थे . करीब तीन घंटे की चढ़ाई के बाद एक पहाड़ी के ऊपर एक सपाट मैदान मिला . तीसरा पहर ढल रहा था . सूरज अपनी गर्मी खो चुका था . जंगल से तेज हवा आ रही थी . पेड़ों के बीच से हवा के गुजरने की जोर से आवाज़ हो रही थी . कुछ ही देर में सबकी थकान छू मंतर हो गयी . तेज हवा की वजह से सबको अपने दुपट्टे और गमछे संभालने पड़ रहे थे . बच्चों ने घास के ढालानों पर लुढ़कने का खेल शुरू कर दिया . कुछ लोग आस पास के पेड़ों पर चढ़ कर नीचे कूदने लगे . छोटे छोटे समूहों में लोग खेल कूद करने लगे .

कुछ देर के बाद सभी ने गाँव में प्रवेश किया . गाँव के किसान राजमल जी के घर में सभी का परम्परागत स्वागत किया गया . सभी को टीका लगाया गया और चीनी और घी खाने के लिए दिया गया .

वहाँ बच्चे और गाँव की महिलायें इकट्ठा थीं . बाहर से आये हुए यात्रियों ने सभी को अपना परिचय दिया . यात्रियों के तीन दल बनाये गए . अलग अलग दल अलग अलग ग्रामीणों के घर में रुकने के लिए चले गए . सभी घर पत्थर चीड़ की लकड़ी और मिट्टी से बनाये हुए थे . चूल्हे के पास बैठ कर गरम गरम रोटियां और स्थानीय जंगली फर्न लुन्गडू की सब्ज़ी , फफरू का साग, बरांश के फूलों की चटनी , पलम के फल, आदि खाना एक अलौकिक



अनुभव था .

अगले दिन सभी मेहमान अखरोट के पत्तों और टहनियों की दातुन करने के बाद अपने मेज़बान की गाय के खाने के लिए पेड़ों की पत्तियाँ तोड़ कर लाये, फिर कुछ लोगों ने गाय का दूध निकालना सीखा . इसके बाद गाय का गोबर

इकठ्ठा किया गया ,फिर उसे पीठ पर लटका कर ले जाने वाली पहाड़ी स्टाइल की टोकरी जिसे किरडा कहा जाता में भर कर खेत में ले गए और वहाँ खाद के गढे में डाल दिया .दोपहर के खाने के बाद सभी ने अखरोट के पेड़ की घनी छाँव में आराम किया . शाम को सभी ने एक घर में इकठ्ठा होकर गाँव के बच्चों के साथ खेल खेले .

अगले दिन सुबह सुबह सभी खेत में चले गए . वहाँ मकई के खेतों में घने पौधों में से कुछ पौधों को निकालने , फिर उन खेतों में फावड़े से गुड़ाई और फिर घास कटाई का काम किया गया. इसके बाद सभी इकठ्ठा होकर . जंगल में जलाने की सूखी लकड़ियाँ और बन के सूखे पत्ते लेने गए . बन एक पेड़ का नाम है, इस पेड़ के सूखे पत्ते गायों के नीचे बिछाए जाते हैं . अगले दिन पत्ते गोबर और गाय के पेशाब से गीले हो जाते हैं फिर इन पत्तों को इकठ्ठा कर के खेत में डाल दिया जाता है जहां उनकी बढ़िया खाद बन जाती है . इसके बाद गायों के नीचे फिर से सूखे हुए नए पत्तों का नया बिछौना बिछा दिया जाता है .

पत्ते और लकड़ियाँ लेने हम सब पहाड़ में दो घंटे का सफर कर के कोठी-पदर नाम के स्थान तक गए . यह एक पहाड़ी के ऊपर एक सपाट जगह है इसके मालिक बैजनाथ कसबे के ब्राह्मण लोग हैं जो राजा के समय से ही इन पहाड़ियों के मालिक बन गए थे . अब कागजों में यह पहाड़ियां किसी की मलिकियत हैं .ऊपर से आस पास के गाँव माचिस की डिबिया जैसे दीख रहे थे . झरनों में ठंडा साफ पानी बह रहा था . पहाड़ के ऊपर एक पुराने मकान के अवशेष दिखाई देते हैं . गाँव वालों का मानना है कि यहाँ कभी राजा की कोठी थी .

हम सबने पत्ते और सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करनी शुरू करीं . अभ्यास ना होने के कारण हमें काफी कठिनाई हो रही थी . लेकिन हमारे साथ गयी हुई गाँव की महिलायें इस सब काम को बहुत ही कुशलता से कर रही थीं .

वहाँ से थोड़ा ही नीचे राजकुमार भाई का घर बना हुआ है . पहाड़ की ढाल पर बना हुआ यह घर पूरे गाँव का सबसे ऊँचाई पर बना हुआ घर है . यहाँ से पंजाब की सीमा पर बना हुआ पोंग डैम भी दिखाई देता है . पहाड़ की ढाल पर बना हुआ घर बहुत ही सुंदर था . घर में राजकुमार भाई की माता जी चरखे पर ऊन कात रही थी . राजकुमार भाई ने खेती में किये जाने वाले प्रयोगों की जानकारी दी. उन्होंने अपने घर के आस पास बहुत सारे फलदार पेड़ भी लगाए हैं . कीवी भी फल रही थीं . राजकुमार भाई की पत्नी मनोरमा जी ने हम सब के लिए सीरे का बना हुआ हलवा और दाल और भाजी के बने हुए पकौड़ खिलाए . सीरा गेहूँ को पानी में कई दिन भीगा कर उसकी पिट्ठी बना कर धुप में सुखा कर रख लिए जाता है. जब हलवा बनाना हो तो उसे पानी में भिगा कर घी में भून कर हलवा बनाते हैं .

गाँव में वापिस आकर हम सब ने खाना खाया और आराम किया. शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ गाँव की बच्चियों ने हिमाचल के कुल्लू इलाके का नृत्य किया. बाहर साये हुए यात्रियों ने भी कुल्लू की पोषक पहनी और नृत्य करने की कोशिश करी .

अगले दिन सुबह हम सभी पहाड़ पर रात बिताने के लिए चल पड़े . करीब पांच घंटे चलने के बाद हम पहाड़ के ऊपर पहुंचे. हमें लगा अब सारा संसार पीछे छूट गया है. लेकिन सामने देखा तो वहाँ एक गाँव बसा हुआ था . हम एक घर के बरामदे में सुस्ताने के लिए बैठ गए. घर से एक लड़की निकली उसने हम से कुर्सियों पर बैठने का

आग्रह किया. हमने कहा हम ज़मीन पर ही बैठना चाहते हैं. वह लड़की बीए में पढ़ती है. रोज़ पढ़ने के लिए उस पहाड़ की ऊंचाई से पैदल उतर कर बैजनाथ तक जाती है और रोज़ वापिस आती है. उसने बताया कि उसे यह दूरी तय करने में चढ़ाई के समय एक घंटा लगता है. यानि जिस दूरी को हमने चौदह घंटे में पूरा किया. वह पहाड़ी लड़की उसे मात्र एक घंटे में पूरा कर लेती है. हम सब यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गए. कुछ दूर आगे एक मंदिर था . मंदिर में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है. हम लोगों में से कोई लोगों ने मंदिर में जाना टाल दिया. बारिश होने लगी. हमारे साथ एक तिरपाल था उसे पेड़ों के बीच बाँध दिया गया . उसके नीचे बैठ कर सबने मजे से खाना खाया . हमने फिर से चलना शुरू किया. आगे बराहन नामका एक पहाड़ था उसकी चोटी पर एक सपाट मैदान था . हम सब वहाँ पहुँच गए .

अब सभी लोग काफी थके हुए थे . वे घास पर आराम करने लगे . कुछ लोग आस पास की पहाड़ियों पर चढ़ कर प्राकृतिक सुंदरता निहारने में लग गए . कुछ देर में हमने टेंट लगाने शुरू किये . टेंट लगाने में बच्चे खूब मज़ा ले रहे थे . एक टोली आस पास पानी खोजने चली गयी. एक टोली आस पास सूखी लकड़ियाँ खोजने निकल गयी . कुछ देर बाद पत्थरों का चूल्हा बनाया गया और खाना बनाना शुरू किया गया . एक तरफ आग जला कर आग तापने का इंतजाम भी कर लिया गया . पहाड़ी पर एक छोटा बघेरा घूम रहा था हमारे साथ गाँव से गया हुआ कुत्ता उस बघेरे से लड़ने गया लेकिन बघेरे से डर कर जल्द ही वापिस भाग आया .

सबने गोले में बैठ कर खाना खाया . सर्दी काफी हो चली थी . सब लोग अपने टेंट में स्लीपिंग बैग में घुस गए . आधी रात के बाद बारिश शुरू हो गयी . सुबह भी बूँदा बाँदी होती रही . सुबह उठ कर सभी लोग नई नई चिड़ियों को देख रहे थे और उनकी आवाज़ें सुन रहे थे . कुछ लोगों ने नाश्ता तैयार करने का काम शुरू किया . सबने गोल घेरे में बैठ कर नाश्ता किया . दोपहर को हम सभी नीचे उतर कर कंडकोसरी गाँव में पहुँचे . काफी थके होने के कारण सब आराम करने लगे . दोपहर का खाना खाकर सबने नीचे उतरने की यात्रा शुरू करी . हम सभी संसाल गाँव में पहुँचे जहाँ गाड़ियां मिली और हम सब वहाँ से एक घंटे का सफर कर के कंडबाड़ी गाँव में संभावना के प्रांगण में पहुँच गए .

संभावना में पहुँच कर इस पूरी यात्रा और ग्राम अनुभव पर चर्चा शुरू हुई . अब हमारे साथ गाँव से भी आठ ग्रामीण शामिल हो चुके थे . हम सभी ने बैठ कर इस पूरी यात्रा की समीक्षा करी . किसने क्या सीखा . सीखने की प्रक्रिया क्या होती है . ग्रामीण जीवन की किस बात ने हमारे जीवन को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, शहरी जीवन और आधुनिक विकास ने किस तरह से हमारे सामाजिक जीवन, और पर्यावरण पर असर डाला है आदि मुद्दों पर चर्चा हुई . सबने माना कि इस तरह के और भी कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहियें ताकि शहरी इलाके के लोग ग्रामीण जीवन को जान सकें और अपने जीवन में सादगी लाएं और ग्रामीण अपने जीवन की बातों को गरिमा के साथ जियें ना कि किसी हीन भावना के साथ .